जब सिनेमा ने बोलना सीखा

पाठ का सार -

भारत की पहली सवाक फिल्म **'आलम आरा '** 14 मार्च 1931 को बनी। यह भारत के सिनेमा जगत के लिए ऐतिहासिक दिन था। इस फिल्म की खास बात यह थी कि इसके सभी कलाकार बोलते हुए नज़र आने वाले थे। इससे पहले जो फिल्में बनती थी वो मूक फिल्में होती थी अर्थात उसमें किसी भी कलाकार की आवाज़ नहीं आती थी। 'आलम आरा' फिल्म के फिल्मकार अर्देशिर एम. इरानी थे। इस फिल्म के गायक डब्लू. एम. खान थे। इस फिल्म ने फिल्म जगत को कई नए अनुभव दिए जैसे इसके पहले मूक फिल्में होने के कारण इस फिल्म ने हमें पहला फिल्मी गीत तथा गीतकार दिए । इससे पहले की सभी फिल्में दिन के प्रकाश में ही शूट कर ली जाती थी। आलम आरा की शूटिंग रात में होने के कारण इसमें कृत्रिम प्रकाश की आवश्यक्ता पड़ती थी। इस फिल्म के बाद इन सभी तकनीकों का प्रचलन हो गया।

'आलम आरा' फिल्म का संवाद भी काफी प्रचलित हुआ। फिल्म में हिंदी तथा उर्दू दोनों भाषाओं का प्रयोग हुआ। इस फिल्म की नाईका ज़ुबैदा थी तथा नायक विट्ठल थे जो उस समय के सर्वाधिक लोकप्रिय तथा सबसे अधिक महंगे कलाकार थे। बतौर नायक विट्ठल को इस फिल्म में काम करने के लिए काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। पहले तो इस फिल्म के लिए नायक के तौर पर विट्ठल का ही चयन किया गया था लेकिन विट्ठल को उर्दू बोलने में काफी कठिनाई होती थी इसलिए उन्हें हटाकर महबूब को इस फिल्म का नायक घोषित किया गया। विट्ठल ने अपना हक पाने के लिए मुकदमा कर दिया। उनका मुकदमा उस समय के सबसे अधिक विख्यात वकील मोहम्मद अली जिन्ना ने लड़ा था। विट्ठल मुकदमा जीत गए और उन्हें भारत की पहली बोलती फिल्म में काम करने का मौका मिला। सभी कठिनाईयों का सामना करने के बाद अन्ततः यह फिल्म 14 मार्च 1931 को मुम्बई के सिनेमा घर में प्रदर्शित हुई।

फिल्म 8 सप्ताह तक हाउसफुल रही। यह फिल्म सफल रही। इसके बाद कई सवाक फिल्में बनी अलग-अलग कथावस्तुओं पर आधारित। फिल्म के सफल होने के 25 साल बाद 1956 में फिल्म के निर्माता-निर्देशक अर्देशिर को सवाक फिल्मों के पिता की उपाधि से सम्मानित किया गया। इसके बाद भारतीय फिल्म जगत का प्रभाव केवल भारत में ही नहीं बल्कि इसकी ख्याति विदेशों में भी फैलने लगी। यह फिल्म भारत के बाहर भी दिखाई गई। इस प्रकार भारतीय फिल्मों के नए दौर की शुरूआत हुई।

सवाक फिल्मों का प्रभाव -

(1) सवाक फिल्मों से हिंदी-उर्दू भाषा को महत्व मिला। भाषा की शुद्धता पर ध्यान दिया जाने लगा।
(2) सवाक फिल्मों से गायन और संगीत को महत्व दिया जाने लगा।
(3) नए वाद्य यंत्रों का आविश्कार और उनमें सुधार हुए।
(4) फिल्मों में जो तकनीकि कमिया थी उनको बेहतर बनाया जाने लगा गया।
(5) फिल्में समाज का प्रतिबिम्ब होती हैं। फिल्मों का असर, उनकी बातचीत का ढ़ंग समाज पर पड़ने लगा। लोगों का सामाजिक स्तर बेहतर नज़र आने लगा।

कुछ आवश्यक जानकारियाँ -

(1) पहली सवाक फिल्म आलम आरा थी। यह 14 मार्च 1931 को प्रकाशित हुई थी।
(2) पहले फिल्में दिन में ही शूट की जाती थी।
(3) 'आलम आरा' फिल्म 10 हजार फुट लम्बी थी। इसे चार महीने की कड़ी मेहनत कर बनाया गया था।

(4) खुदा की शान फिल्म में एक किरदार महात्मा गाँधी की तरह था। इसलिए अंग्रेजी सरकार इसके विरुद्ध थी।
(5) आलम आरा के 25 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष में 1956 में फिल्म के निर्माता निर्देशक को 'भारतीय सवाक फिल्मों का पिता' के सम्मान से सम्मानित किया गया था।
(6) फिल्म 'माधुरी' की नायिका सुलोचना थी।

निबंध का उद्देश्य -
(1) फिल्मों के नए रूप को बेहतरीन ढ़ंग से लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।
(2) समय-समय पर फिल्मों के रूप में आने वाले परिवर्तन से परिचय करवाया गया है।
(3) समाज पर फिल्मों द्वारा पड़े प्रभाव को भी दिखाया गया है।

निबंध का संदेश -
प्रस्तुत निबंध के माध्यम से लेखक ने फिल्मों के बदलते स्वरूप का महत्व हमारे समक्ष रखा है। फिल्में समाज का दर्पण होती है। फिल्मों का सीधा प्रभाव समाज पर पड़ता है। समय समय पर सिनेमा जगत में आए बदलाव तथा उसके प्रभाव से हमारा परिचय करवाया गया है।